Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052 (UIF)
Volume-4 | Issue-7 | Jan-2015 Available online at www.aygrt.isrj.org

उपन्यासकार : डॉ. रामधारीसिंह दिवाकर

अलोने चंद्रशेखर त्रिंबक

हिंदी विभाग, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, ता.जि. औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत,

सारांश – प्रस्तुत आले in में डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर के उपन्यास साहित्य को समझना चाहा है । आपने छह उपन्यास लिखे हैं । क्रमशः क्या घर क्या परदेश, काली सुबह का सुरज, पंचमी तत्पुरूष, आग-पा-नी-आकाश, टूटते दायरे, अकाल संध्या । इनका परिचय यहाँ दिया गया है ।

प्रस्तावना :

डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर १० कहानी संग्रह और छह उपन्यासों के धनी है । आपका पहला उपन्यास 'क्या घर क्या परदेस' सन् १९८३ में प्रकाशित हुआ । इसके बाद दूसरा उपनयास 'काली सुबह का सुरज' सन् १९८५, तिसरा 'पंचमी तत्पुरूष' सन् १९८७, चौथा 'आग-पा-नी-आकाश' सन् १९९९ , पाँचवा 'टूटते दायरे' सन् २००२, छठा 'अकाल संध्या' सन् २००९ प्रकाशित हुए हैं । इसका विवेचन निम्नानुसार है इ

संशोधन पद्धती

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक संशोधन पद्धती द्वारा लिखा गया है ।

उपन्यास साहित्यों का विवेचन :

क्या घर का परदेश :

प्रस्तुत उपन्यास का प्रमुख पात्र है कौशल । कौशल एक मेधावी युवक है जो अपने बीमार बाप, बूढ़ी माँ, विधवा बहन और उसकी बेटी का एक मात्र सहारा है । परिवार गरीब होने के बाद भी वह बी.ए. तक पढ़ता है और फिर एक सामान्य नौकरी की उम्मीद रखता है । वह गाँव छोड़कर शहर जाता है और वहाँ से गाँव लौट आता है । सब तरफ हो रहे भ्रष्टाचार से वह तंग आता है । उसके चाचा नूनू बाबू ढेके, कोऑपरेटिव आदि तिकड़म करके सुख चैन की जिंदगी जीते हैं । दलित युवा नेता रागलगन दलित सासंद के नाम पर कई व्यवसाय चलाता है । मैट्रिक तक पढ़े लड़के किसी न किसी लूट के व्यवसाय में लगकर मजे से पैसा कमाते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास का गांव के चबूतरे पर बैठनेवाला भिखारी रामदास सबके कारनामों का साक्षी होता है। वह जानता है कि सखीचंद सरकारी स्टोर का सामान बेचकर ठाठ की जिंदगी बीता रहा है । संतसेवी ने किसना की माँ की देढ़ बीघा जमीन हथिया रखी है और उसे पंचायत या कोर्ट □चहरी में न्याय नहीं मिलता है । नूनू चाचा बार-बार कौशल को याद दिलाता है कि पढ़ने लिखने से कुछ नहीं होता, पैसा कमाने की योग्यता सबसे बड़ी योग्यता होती है। पैसा कमाने का सुअवसर कौशल को भी मिलता है, किंतु उनके साथ शर्त लगी होती है कि वह दलित सांसद की रखैल की बेटी से शादी □र ले ।

सम्पूर्ण उपन्यास में दम तोड़ते हुए मूल्यों की चीख व्याप्त है । गाँव में आज मणिविहीन नागड़ीह बन गए हैं । उपन्यास के अंत में उस मणि को खोजने के लिए गाँव उद्दत दिखाई देता है । जिसके चमत्कार से गाँव के चौपाल के टूटे चबूतरे की दीवार से एक पीपल का पेड़ फूट कर निकल सकता है ।

उपन्यास को लेकर मस्तराम कपूर अपना मंतव्य करते हैं कि, "महानगरों की मशीनी जिंदगी से ऊबकर एक रोमानी भाव से गाँव की ओर देखनेवाले लोगों को इस उपन्यास से निराशा के सिवा कुछ नहीं मिलेगा । अलबत्ता जो लोग नेताओं के दावों और तरक्की के आकड़ों पर विश्वास करने लगे हों, उन्हें इस उपन्यास का एक बार पारायण जरूर करना चाहिए । कौशल जब कई सालों के बाद गाँव लौटता है तब उसे गोहाल की स्थिति को देखकर ही घर की स्थिति का बोध हो जाता है । परिवार की स्थिति का यह प्रतीक अपने आप में प्रतिबिंबित कथा की तरह था और यह कथा मुझे एक हल्के स्पर्श में करूण त्रासदी का आघात दे रही थी ।"[१]

□ाँव संक्रमित होकर विभाजित हो रहे हैं । इसी बात को लेकर गंगाप्रसाद विमल अपना मंतव्य रखते हुए कहते हैं कि, "गाँव से महानगर की □ामोश यात्रा"[२] इस प्रकार से प्रस्तुत उपन्यास मध्यवर्गीय परिवारों की समस्याओं को सामने रखता है, गाँव के बदलाव को सामने रखता है, टूटते मूल्यों और परिवारों से उत्पन्न समस्याओं को अधोरेखित करता है ।

□ाली सुबह का सूरज :

'काली सुबह का सूरज' रामधारी सिंह दिवाकरजी का नवीनतम लघू उपन्यास है । इसमें देहात से शहर आनेवाले निम्नमध्यवर्ग के एक बुद्धिजीवी कहलानेवाले प्राध्यापक नरेंद्र की 'अंतरूणी' कथा है जो अपने जीवन स्तर को उन्नत करने की प्रक्रिया में निरंतर गिरता जाता है - इस संदर्भ में अमर कुमार सिंह कहते हैं कि, "छोटे बेल के आकार का सूर्ख का लाल फल ऊपर से आकर्षक और भीतर से बदबूदार और बेहद घिनौना । नरेंद्र की कहानी छोटी सुविधाओं और छोटे साधनों की प्राप्ति के लोभ में देश के सामाजिक जीवन में बुद्धिजीवी कहलाने वाले व्यक्तियों की आदमियत के बिकने की कहानी है । देहात में रहनेवाली एकदम सीधी-सादी किंतु ऐन मौके पर तन जानेवाली नरेंद्र की माँ, गाँव के सिरनाथ चाचा, रांची में नरेंद्र के छोटे भाई दिनेश का इलाज करानेवाला रामफल कथा के ऐसे पात्र हैं जो जीवन को अन्तर्वैयक्तिक सामाजिक संबंधों और उनके बदलते रूपों की गहरी समझ रखते हैं और अभावों में जीने पर भी अपनी संवेदनशीलता नहीं खोते । इनमें मिलनेवाले वैचारिक स्फुलिं□ □ी प्रवृत्ति मा-नवीय है । इसका रहस्य उस मानव जीवन दृष्टि में छिपा है जिसमें जरूरते कम है और जीवन का लक्ष्य दिखावे के लिए समृद्धि या साधन की उपलब्धि नहीं है ।"[३]

प्रस्तुत उपन्यास को लेकर सिद्धेश जी अपना मंतव्य रखते हुए कहते हैं कि, "गाँव जवार में जीने वाले लोगों की सहजता और निष्कपट संबंधों के बीच एक अंतर्निहित संवेदना काम करती है जो परिवार मुहल्ले को आपस में जोड़ती है और यही उनकी धरोहर है । आज पढ़े-लि□ी लो□ गाँव छोड़कर शहर में जा बसे हैं । शहर की रौनक, मात्र भाग दौड़ और एक-दूसरे से चढ़बढ़कर जीने की प्रतिद्वंद्विता में ऐसे लोग संबंधों के निश्चल निर्वाह और आत्मीयता से कटते चले जाते हैं और स्वार्थ, इर्ष्या और झूठ के जंजाल में फंसते चले जाते हैं । यह शहर नगर का अभिशाप है ।"[४] इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि शहरी संक्रमण के दुष्परिणामों को प्रस्तुत उपन्यास हमारे सामने रखता है । गाँव की पृष्ठभूमि पर लिखे काली सुबह का सूरज इस उपन्यास में रामधारी सिंह दिवाकरजी ने गाँव-शहर के द्वंद्व को बड़ी सहजता से उकेरा है । सारांश में हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत उपन्यास शहरी संक्रमण के दुष्परिणामों को सामने रखता है ।

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 3.4052 (UIF)
Volume-4 | Issue-7 | Jan-2015 Available online at www.aygrt.isrj.org

पंचमी तत्पुरूष :

प्रस्तुत उपन्यास स्त्री विमर्श को दर्शाता है । प्रस्तुत उपन्यास अहिल्या के इर्दगिर्द है । अहिल्या की व्यथा-□था □ बहाने □मी□ स्त्रियों □ी तीन पीढ़ीयों की विडम्बना भरी जिंदगी का गहरा विश्लेषण प्रस्तुत उपन्यास में मिलता है । पहली पीढ़ी मुकदमेबाज, निर्लज्ज क्रूर और बदचलन पति के अत्याचार को सहती, एक खुली सांस को तरसती और कुछ कुछ मन के स्तर पर विद्रोहिनी अहिल्या की माँ वाली है । तो दूसरी पीढ़ी खुद अहिल्यावाली है और तीसरी पीढ़ी ससुराल वालों द्वारा जिन्दा जला दी जानेवाली अहिल्या की बड़ी बेटी आभावाली है । तीनों पीढ़ीयों की व्यथा के व्यंग्य के प्रहार का सीधा कथ्य पुरूषों की भोगवादी मानसिकता है । गहरे सामाजिक सारोकार की वजह से ही उपन्यासकार ने गाँव के उच्च निम्न मध्यवर्ग की स्त्रियों की घुटती जिंदगी के बर अक्स दुलरिया की माँ के चरित्र को आकार और रंग दिए हैं ।

'पंचमी तत्पुरूष' को लेकर पवन कुमार झा अपना मंतव्य रखते हैं कि, "क्या घर क्या परदेश और काली सुबह का सूरज के बाद पंचमी तत्पुरूष रामधारी सिंह दिवाकरजी का तीसरा उपन्यास है । पहले उपन्यास में जहाँ गाँव और शहर के बीच सुख और संतोष को तलाशने □ □म में टूट-टूटकर बिखरते हुए एक युवक की पीड़ा अभिव्यंजित हुई है, वही दूसरे उपन्यास में गाँव के एक ऐसे युवक की कहानी है जो शहरी जीवन और सुविधाओं के पीछे भागता हुआ अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी के प्रति निर्लज्जता की हद तक बेईमानी करता चला गया है । यह तीसरा उपन्यास स्टेटस के ग्लैमर से सम्मोहित ऐसे पुरूष वर्ग पर चुभता व्यंग्य है जो स्त्रियों के प्रति भोगवादी नजरिया और क्रूर उपेक्षा का भाव रखता है ।"[५]

आग-पानी आकाश :

'आग पानी आकाश' यह एक दिवाकरजी का बहुचर्चित उपन्यास है । इस उपन्यास को लेकर राजकिशोर जी कहते हैं, "यह उपन्यास दलित समाज, दलित मनोविज्ञान और समाज व्यवस्था के बदलते हुए रूपों को समझने का प्रामाणिक रचनात्मक प्रायास है ।"[६] इसी बात को हरजेंद्र चौधरी अलग ढंग से कहते हैं कि, "कथाकार रामधारी सिंह दिवाकर का चौथा उपन्यास 'आ□-पानी आकाश' हमारी सामाजिक व्यवस्था में घटित हो रहे कुछ महत्त्वपूर्ण बदलावों को रेखांकित करता है । उपन्यासकार ने गरीब दलित लोगों के वर्गांतरण के विवादास्पद विषय को काफी संतुलित और ल□भ□ सांगोपांग ढंग से हमारे सामने रखा है ।"[७] आदि । विद्वानों ने इस उपन्यास की अपने-अपने ढंग से परखा है । अब हम इसकी कथावस्तू से परिचित हों□ - "यह मूलतः दो दलित परिवारों की कथा है, जिसमें रंग भरने के लिए इनके जीवन को प्रभावित करनेवाले वर्गों के आख्यान का उपयोग किया गया है । एक परिवार है बब्बन धोबी का, जो गाँव के जमींनदार के परिवार के ही कपड़े धोता है । उसके दो बेटे है - एक युगेश्वर, जो ऊँची शिक्षा पाकर अफसर बनता है और दूसरा भागवत जो अपने एक विधायक रिश्तेदार की मदद से ठेकेदारी के धंधे में लग जाता है । दोनों को समृद्धि मिलती है । शुरू से ही युगेश्वर की इच्छा रहती है कि वह अपनी दलित पृष्ठभूमि से निकलकर मध्य वर्ग की आधुनिकतावादी धारा में प्रवेश करें । अतः वह जैसे-जैसे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है और साथ ही अपने अतीत को भूला देना चाहता है । हाँलाकि यह पूर्णतः संभव नहीं होता है । युगेश्वर की इस मानसिकता का लेखक ने बहुत सुंदर ढंग से वर्णन किया है । यह मानसिकता स्पष्ट करती है कि जब तक दलितों को सिर्फ आरक्षण दिया जाएगा - जातिभाव के विनाश का वातावरण नहीं बनाया जाएगा तब तक दलितों की सफलताएँ एक असामान्य किस्म के व्यक्तित्त्व को पैदा करती रहेंगी । यही बात युगेश्वर के व्यक्तित्त्व से स्पष्ट होती है ।

इधर भागवत ठेकेदारी और भ्रष्टाचार के जरिए समृद्धि हासिल करता है और एक उच्च वर्गीय लुपेन बन जाता है । उसकी पतनकथा हिंदी भाषी समाज में उभरे नवधनाढ्य वर्ग के आयामों को स्पष्ट करती है । इन दोनों □ विपरीत है रामजतन चमार के बेटे रामसंजीवन का जीवन, जो और भी कुलिन परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त करता है, लेकिन जिसका लक्ष्य मात्र व्यक्तिगत सफलता हासिल करना नहीं है । वह देखता है कि यह सफलता हासिल करने के लिए कितनी आत्मिक कीमत चुकानी पड़ती है । अतः वह अपने परिवार के एवं आसपास के लोगों का जीवन सुखमय बनाने का प्रयास करता है । स्पष्टतः ही उपन्यास का हीरो वही है, जिसका जीवन दर्शन उपन्यास के युगेश्वर की मामी के इन शब्दों में व्यक्त होता है, "अपनी उस जमीन को नहीं भूलना चाहिए, जिस जमीन से ऊपर उठें हैं आप । जो जमीन को भूलता है, अपनी पृष्ठभूमि को भूलता है... वह कृतघ्न है, उसका जीवन कृत्रिम है ... ।"[८] निश्चय ही यह कृत्रिमता सिर्फ नवसफल दलित वर्ग के जीवन में नहीं बल्कि पूर्ण भारतीय समाज के मध्य वर्ग में देखी जाती है

। अत: दलित जीवन के चित्रण से प्राप्त अंतर्दृष्टि पूर्ण समाज को भी समझने में मदद करती है । लेखक ने एक और दलित पात्र चौढी लाल के माध्यम से उस दलित संघर्ष को रूपायित करने का प्रयास किया है, जो संगठित और आक्रमक रूप ले रहा है । लेकिन इस प्रसंग से हमें यह बोध होता है कि दलितों का शक्तिशाली वर्ग ही किस तरह दलित संघर्ष को कुचलता है । इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु से हम परिचित होते है ।

टूटते दायरे :

'टूटते दायरे' रामधारी सिंह दिवाकरजी का यह पहिला लिखा गया उपन्यास है, किंतु प्रकाशन-क्रम में यह उनका पांचवा उपन्यास है । अपने नए उपन्यास 'टूटते दायरे' के विलंब से प्रकाशित होने की वजह दिवाकरजी ने अपनी भूमिका में स्पष्ट की है। उनका कहना है कि यह उपन्यास ८५-८६ में लिखा गया था जो प्रकाशक की अकर्मण्यता की वजह से विलंब से आ रहा है । उन्होंने यह भी लिखा है कि आज से पन्द्रह वर्ष पहले इस उपन्यास को लेकर उनके अंदर जो उत्साह और उल्लास था अब ठीक उल्टा हो गया, फिर तो लगा यह उपन्यास न छपें, यही अच्छा है । इस उपन्यास के संदर्भ में अरूण नारायण कहते हैं, "अपने प्रारंभिक रचना कर्म के प्रति दिवाकर में एक दुविधा की स्थिति है । एक तरफ वे यह चाहते हैं कि यह कृति प्रकाशित न हो यही बेहतर। दूसरी ओर वह यह स्वीकार करते हैं कि यह रचना उन्हें अपने जवा-नी दिनों के सपनों की तरह प्रिय है और इसमें उनके परवर्ती कथा-लेखन के कुछ सूत्र मिल जाएँ ।"[९]

प्रस्तुत उपन्यास गाँव की पृष्ठभूमि को हमारे सामने रखता है । शहरी संक्रमण के कारण गाँव नष्ट हो रहे है यही बात वह इस उपन्यास के माध्यम से बताना चाहते हैं । यह उपन्यास पूर्णिया अंचल के एक गाँव सुरपतगंज के निवासियों को केंद्र में रखकर लिखा गया है जिसमें आजादी के बाद तेजी से ढहते मूल्यों की गहरी छानबीन है। आजादी, अस्पृश्यता, शिक्षा, बेरोजगारी, अकाल, साम्प्रदायिकता आदि उपन्यास के विषय हैं । आधुनिक विकास और शहर ने गॉव में सेंध लगा दी है । यही बात इस उपन्यास में बार-बार बताई गई है ।

अकाल संध्या :

'अकाल संध्या' में गाँवों के बदलते सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समीकरणों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखा गया है । फणीश्वरनाथ रेणू की तरह रामधारी सिंह दिवाकर अपनी बौद्धिकता और विश्लेषक मानसिकता के कारण गाँवों की समस्याओं के मूल तक पहुँचकर उनके समाधान के लिए अपनी प्रतिबद्धता सिद्ध करने की कोशिश करते हैं । असंतुलित अर्थव्यवस्था से सामंती मनोवृत्ति और भो ी प्रवृत्ति ी जड़ को पोषण मिलता है । यह उपन्यासकार की यथार्थवादी व्याख्या है । भारत में सामंती व्यवस्था के ध्वंस पर जिस लोकतांत्रिक व्यवस्था का पल्लवन हुआ उसमें वोट की राजनीति की सक्रिय और अहम् भूमिका रही । बदली हुई व्यवस्था में सवर्णों के बीच भी गहरी खाई बन गई । प्रस्तुत उपन्यास का निर्भिक पात्र बुद्धन मांझी का यह कथन, "मुदा एक्के बात हजूर .... एक्के बात से चिंता होती है कि जो चढ़ गया सिंहासन पर वही राजा । और राजा-राजा एक समान । क्या ब्राह्मण-राजपूत क्या जादब कुर्मी, चमार-धरकार राजा-राजा एक समान।"[१०] गाँव की नई सामाजिक व्यवस्था में शोषण और दमन को स्पष्ट करता है । उपन्यासकार के अनुसार शक्ति, सत्ता और आकस्मित रूप से प्राप्त अत्याधिक धन ही अन्याय और मानवीय मूल्यों के अवमूल्यन के मूल कारण है । नेताओं, मंत्रियों, प्रशासनिक अधिकारियों आदि के भ्रष्टाचार नैतिक पतन और व्याभिचार से लोकतंत्र की खामियों का संकेत मिलता है । यादव टोली के दयानंद उर्फ डायमंड और बाबुआन टोली के बैताल सिंह जैसे डकैत अब नेता हैं । अवर्णों, सवर्णों के नाम पर राजनीति करके स्वार्थ सिद्धि इनका लक्ष्य है । माई का यह प्रश्न "पता नहीं, कहाँ से आते हैं इतने रूपये एक विधायक को । सुना कि पटने में कोई होटल है डायमंड का । दिल्ली में फ्लैट । सिलिगुड़ी में कोई मकान खरीदा है । कहाँ से आते है इतने रूपये ?"[११] आज हर बुद्धिजीवी को विचलित करता है । खवास टोले झौली मड़र का बेटा विनोद बी.डी.ओ. है और चमार टोली के लुचाय राम का बेटा रामबरन एस.पी. । वि-नोद बबुआन टोले के रणविजय बाबू की और रामबरन ने बड़क टोले के सुरवंश शर्मा की काफी जमीन खारीद ली है । रामबरन का गाँव में आलीशान व्हाइट हाऊस है और लुचाय राम शोषण और भोगविलास की गतिविधियाँ एक सामंत से बढ़कर है । उपन्यासकार ने इनके माध्यम से भ्रष्ट प्रशासनिक व्यवस्था को पारदर्शिता के साथ उभारा है । प्रस्तुत उपन्यास संक्रमणशील ग्रामीण जीवन में राजकीय व्यवस्था ा यथार्थ चित्रण करता है ।

इस प्रकार से हमने डॉ. रामधारी सिंह दिवाकरजी के उपन्यासों का स्थूल परिचय दिया है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त अध्ययन के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि, "दिवाकरजी साहित्यिक परम्परा से हटकर नहीं लिखते हैं वे परम्परा से साहित्य में आ रहे विषय जैसे सामाजिक मूल्य, जातिव्यवस्था, परिवार विघटन बेरोजगारी, गरीबी, सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण आदि को महत्त्व देते हैं । इसी साहित्यिक परम्परा को वे नये रास्ते से निभाते हैं और वह रास्ता है संक्रमणशीलता का, उससे संक्रमित व्यवस्था का । वह जीवनमूल्यों की समकालीन स्थिति, जातिव्यवस्था का समकालीन स्वरूप, परिवार विघटन का समकालीन दृश्य, गरीबी, बेरोजगारी, सांस्कृतिक ऱ्हास आदि सामाजिक समस्याओं को संक्रमणशीलता की चौखट में देखने का प्रयास करते हैं ।"

अत: हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दिवाकरजी का समग्र साहित्य संक्रमणशील ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण करता है । इसमें वह संक्रमणशील ग्रामीण समाज में बदलते जीवन मूल्यों की बात करते हैं इसी प्रकार से परिवार विघटन, जातिव्यवस्था शैक्षिक व्यवस्था, सांस्कृतिक व्यवस्था की सद्यस्थिति आदि बातों को भी एक नये ढंग से प्रस्तुत करते हैं और इससे हमे एक नई दृष्टि मिलती है ।

संदर्भ :

१. ग्रामीण जीवन का समाजशास्त्र, पृ. १२६
२. वही, पृ. १२६
३. वही, पृ. १३५
४. वही, पृ. १४०
५. वही, पृ. १४९
६. वही, पृ. १५७
७. वही, पृ. १६७
८. वही, पृ. १६८
९. वही, पृ. १९३
१०. अकाल संध्या, पृ. २८६
११. वही, पृ. २६१

अलोने चंद्रशेखर त्रिंबक
हिंदी विभाग, राजीव गांधी महाविद्यालय, करमाड, ता.जि. औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत,